Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 2, Issue - 5, Sept-Oct – 2019
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 1.847
Received on : 20/09/2019 Accepted on : 04/10/2019 Publication Date: 30/10/2019

प्रेम जनमेजय के व्यंग्य-निबंध में अभिव्यक्त वर्तमान परिदृश्य

[1] Mk- **देशबंधु तिवारी** [2] **पूनम साव**
[1] शोध– निर्देशक [2] शोधार्थी
[1] प्राचार्य सांई महाविद्यालय सेक्टर–06, भिलाई नगर
[2] कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय सेक्टर–07, भिलाई नगर

सारांश % व्यंग्य को संघर्षशील मस्तिष्क की देन मानने वाले प्रेम जनमेजय व्यंग्य के सशक्त हस्ताक्षर है। जिनका जन्म ही व्यंग्य को व्यंग्यास्त्र के रूप में प्रयोग करने हेतु हुआ है। जिसका प्रयोग प्रेम जनमेजय ने राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक, साहित्यिक, शैक्षिक, आर्थिक एवं धार्मिक इत्यादि परिस्थितियों में बढ़ती हुई विसंगति, अन्याय, अत्याचार, विडम्बना, आक्रोश, पीड़ा, क्रोध, सामाजिक कलह, सांस्कृतिक विसंगति, घर–परिवारों में अनेकानेक कारणों से होने वाली विसंगतियों को कटु व्यंग्य के माध्यम से अभिव्यक्त करने हेतु किया है। व्यंग्य की स्वीकार्यता बढ़ाने और उसे प्रतिष्ठित करने में प्रेम जनमेजय की भूमिका सर्वविदित है। इन्होनें व्यंग्य को एक आक्रामक और संहारक रचना शैली में प्रयोग करते हुए विसंगतियों एवं विद्रुपताओं को उजागर किया है।

मुख्य बिन्दू: व्यंग्यास्त्र, विसंगति, विडम्बना, आक्रामक, संहारक, विद्रुपता इत्यादि।

प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में व्यंग्य साहित्य आधुनिक विधा है। हिंदी साहित्य के आधुनिक युग में पदार्पण के साथ–साथ साहित्य में व्यंग्य स्वर बड़ी तीव्रता से मुखरित होता सुनाई पड़ा इस स्वर से युक्त साहित्य का उद्देश्य चारों तरफ फैले भ्रष्टाचार–अनाचार, छल–कपट, लूटपाट–धोखाधड़ी, यशलिप्सा–पदलिप्सा, अनुशासनहीनता–चरित्रहीनता, अंधविश्वास–अंधानुकरण, हत्या, अन्याय, सूदखोरी, रूढ़िवादिता आदि विसंगतियों का सजीव चित्रण करना है। व्यंग्यकार व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं आपराधिक विसंगतियों पर सीधा प्रहार करते हैं। व्यंग्य में जहाँ हँसी के पुट विद्यमान होते हैं, वहीं वह व्यवस्था में व्याप्त समस्याओं को उजागर कर समस्याओं की ओर ध्यान इंगित कराता है। हमारे जीवन के हर क्षेत्र में विद्रुपताओं का जमावड़ा इतना अधिक हो गया है, कि उन्हें प्रत्यक्ष रूप से कहना संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में व्यंग्य एक बहुत बड़ा हथियार है। व्यंग्य साहित्य जीवन की विसंगतियों को कुनैनी और तेजाबी भाषा में व्यक्त करता है। जिसमें यथार्थ बोध की विषमता के साथ यथार्थ तर्क की वक्रता भी उद्भाषित होती है जो जनमानस की बुद्धि को कुरेदकर उसमें तिलमिलाहट और बैचेनी पैदी करती है। जब तक समाज में अन्याय, अत्याचार, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, विसंगतियाँ, विकृतियाँ, निर्दयता विद्यमान रहेगी व्यंग्य रामबाण की तरह अपना कार्य करती रहेगी।

जीवन एवं जगत् में चारों ओर फैली विसंगतियों, विडम्बनाओं, विषमताओं पर किसी भी रूप में प्रहार, आक्षेप एवं कटाक्ष करने वाली साहित्यिक विधा व्यंग्य है। व्यंग्य को संघर्षशील मस्तिष्क की देन मानने वाले प्रेम जनमेजय व्यंग्य के सशक्त हस्ताक्षर है। जिनका जन्म ही व्यंग्य को व्यंग्यास्त्र के रूप में प्रयोग करने हेतु हुआ है। जिसका प्रयोग राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं धार्मिक इत्यादि परिस्थितियों में बढ़ती हुई विसंगति, अन्याय, अत्याचार, विडम्बना, आक्रोश, पीड़ा, क्रोध, सामाजिक कलह, सांस्कृतिक विसंगति, घर–परिवारों में अनेकानेक कारणों से होने वाली विसंगतियों को कटु व्यंग्य के माध्यम से अभिव्यक्त करने हेतु किया है। व्यंग्य की स्वीकार्यता बढ़ाने और उसे प्रतिष्ठित करने में प्रेम जनमेजय की भूमिका सर्वविदित है। इन्होनें व्यंग्य को एक आक्रामक और संहारक रचना शैली में प्रयोग करते हुए विसंगतियों को उजागर किया है।

व्यंग्य शब्द हिंदी साहित्य में नया नहीं है। व्यंजना ही व्यंग्य का बीज माना जाता है। अंजन धातु में वि उपसर्ग लगाने से व्यंजना शब्द निर्मित हुआ है। व्यंजना से तात्पर्य विशेष प्रकार के अंजन से है। जिस प्रकार आँखों में लगा हुआ

अंजन दृष्टि दोष को दूर करता है, ठीक उसी प्रकार व्यंजना शक्ति शब्द के मूल में छिपे हुए अर्थ को प्रकट करती है। ''हिंदी में व्यंग्य शब्द, मूलतया संस्कृत भाषा की देन है। संस्कृत में इसकी व्युत्पत्ति अज्ज धातु में 'वि' उपसर्ग और ण्यत् प्रत्यय लगाने से हुई है। अज्ज धातु के अर्थो में सम्मिलित है व्यक्त करना, प्रस्तुत करना, सफाई करना आदि। इसी अज्ज धातु से व्यंजना, व्यंजित, व्यंजन आदि बने है। व्यंग्य मूल तथा गूढ़ एवं छिपा हुआ अर्थ। इसका अर्थ कटुक्ति, ताना,बोली भी माना गया है।''[1] दुसरे शब्दों में व्यंग्य को ताना या चुटकी भी कहा जा सकता है। वास्तव में व्यंग्य मनुष्य के भीतर पायी जाने वाली स्वाभाविक प्रवृति है, जिसका जन्म घृणा से होता है। मनुष्य समाज में व्याप्त जिन विसंगतियों को दूर करना चाहता है। वह अपनी इस इच्छा को निंदा और व्यंग्य के माध्यम से प्रकट करता है। जिससे व्यंग्य का सृजन होता है।

हिंदी साहित्य जगत में प्रेम जनमेजय प्रसिद्ध व्यंग्यकार के रूप में जाने जाते है। पिछले कुछ वर्षो से इन्होंने व्यंग्य जगत को एक नया मार्ग दिखाया है। व्यंग्य के संबंध में प्रेम जनमेजय कहते है कि–''मैं व्यंग्य को उसकी समसामयिकता, प्रहारक शक्ति, तीव्र संप्रेषणीयता और निहित जनवादी दृष्टिकोण के कारण सही अर्थो में प्रगतिशील साहित्य मानने का पक्षधर हूँ।''[2] प्रेम जनमेजय व्यंग्य को प्रगतिशील साहित्य मानते है क्योंकि यही एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसमें तीव्र मारक क्षमता होती है। वर्तमान में जो विसंगतियाँ चारों ओर फैली हुई है, उसे उजागर करने का यह एक सही दृष्टिकोण है। यह समाज में व्याप्त मिथ्याचारों एवं पाखंडो पर कटु प्रहार करता है।

वर्तमान में राजनीति, जीवन नीति बन गई है। राजनीति के जिन साधनों से जनता का हित होना चाहिए, वहीं साधन नेता अपने उपयोग में ला रहे हैं। छल–प्रपंच और कलह के नये–नये अध्याय लिखे जा रहे हैं। गुटबाजी, दलबदल, कुर्सी की खींचातानीं जैसे विषय वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक हो गए हैं। हम भले ही प्रजातांत्रिक व्यवस्था में सांस ले रहे हैं। जो जनता की, जनता के लिए तथा जनता के द्वारा होती है। आधुनिक राजनीति क्षेत्र में अनेक विसंगतियाँ भरी पड़ी है। जहाँ राजनीतिक परिदृश्य में ईमानदारी, सच्चरित्रता, कार्य के प्रति समर्पण, त्याग जैसी भावनाओं को खोजपाना दुष्कर सा हो गया है। इनकी जगह गलाकाटू स्पर्धा, अवसरवादिता, भ्रष्टाचार आदि ने ले ली है। इन परिस्थितियों पर व्यंग्य करते हुए प्रेम जनमेजय लिखते है कि–''और नहीं तो क्या बाबूजी, हमारे बच्चे महतारी और हम खूब म्यूजिक सुनते हैं, रात–दिन गाना–बजाना करते पार्टी वाले इधर से उधर अपने कार–स्कूटर दौड़ाते रहते हैं। कई बार खाने–पीने को, समझे बाबू, पीने को भी मिल जाता है। आपके यहाँ क्या चल रहा है? किसकी हवा चल रही है?''[3] उक्त कथन से चुनावी गर्मी के समय की परिस्थितियाँ स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है। चुनाव के समय किस तरह से मतदाताओं को लुभाने का प्रयास किया जाता है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था अत्यंत जटिल है। इसमें धर्म, संस्कृति, रूढ़ियों तथा परम्पराओं आदि का अस्तित्व है। आज सामाजिक परिवेश में जहाँ पुरानी रूढ़ियाँ घिसट रही है, वहीं दूसरी ओर कई प्रकार की विषमताएं तथा विसंगतियाँ जन्म ले रही है। सामाजिक व्यंग्य का उद्देश्य समाज का वास्तविक चित्रण और समाज सुधार की बात करना है। सामाजिक परंपराएं तथा रूढ़ियाँ, शोषण, अत्याचार एवं भ्रष्टाचार, पारिवारिक विघटन, व्यापारी नीति, नारी एवं पुरूष की स्थिति, दहेज विभीषिका, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, प्रदर्शनवादी मानसिकता, भोगवादी प्रवृत्ति, वृद्धों के प्रति उपेक्षा इत्यादि प्रकार की विसंगतियाँ समाज में विद्यमान है। पश्चिम के अंधानुकरण के प्रभाव से बढ़ती फैशन परस्ती, सांस्कृतिक विरासतों के प्रति उपेक्षाभाव आदि कारणों से सांस्कृतिक विसंगतियों का जन्म हो रहा है। आज हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति केवल मखौल का विषय बन गयी है। अपने पूर्वजों की गौरवशाली परपंरा को भूल कर पश्चिम की नकल के अंधी दौड़ में हम अपनी ही संस्कृति को हानि पहुँचा रहे हैं। सभ्यता के मायने भूलते जा रहे हैं। इन परिस्थितियों पर व्यंग्य बाण चलाते हुए प्रेम जनमेजय लिखते हैं कि ''राधा विवाहिता थी और केवल श्याम में अनुरक्त थी, आधुनिक राधाएं–शाधाएं विवाहिता हैं, पर राम, श्याम, बलराम किसी में अनुरक्त हो सकती हैं। ये शारीरिक रूप से नायिकाएं है तथा मानसिक रूप से नायक। ये बहुत व्यस्त हैं।''[4] प्रेम जनमेजय द्वारा समाज में हो रहे परिवर्तन एवं परिस्थितियों पर व्यंग्य प्रहार करने का तरीका बहुत ही अनुठा है।

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। यहाँ पर अपने धर्म की स्वतंत्रता होने के कारण धर्म के नाम पर कुकर्म करने की भी आजादी है। समाज के हर वर्ग में धार्मिक पाखंडो का जोर है। देश भर में न जाने कितने स्वामी, बापू, बाबा हैं, जो

लोगों की भावनाओं को छल कर अपने लिए बड़े–बड़े फार्म हाउस, कारखानों के मालिक व देश–विदेश के बैंकों में अरबों रूपये जमा किये हुए हैं। प्रेम जनमेजय की तीक्ष्ण दृष्टि इन धार्मिक विसंगतियों पर पड़ी है। प्रेम जनमेजय 'कोई मैं झूठ बोलया' निबंध संग्रह में लिखते हैं कि–''बच्चू भैया ने अंटी से दो का नोट निकाला और लिफाफे में पड़े केले निकालकर चढ़ाने लगे।

''बस इतना ही!'' सनातनजी ने घृणा से देखकर कहा।
''हमारी श्रद्धा इतनी ही है।'' बच्चू भैया ने मासूमियत में कहा।
''श्रद्धा पचास तक बढ़ाओ।''
''नहीं, दस से ज्यादा नहीं बढ़ेगी।''

फुसफुसाहट से फैसला पचीस पर हुआ। बाबा इन सांसारिकों के झगड़े को देखकर फिर साधनारत् हो गए। उन्हें सनातनजी की श्रद्धा पर संपूर्ण विश्वास था। बच्चू भैया ने प्रसाद चढ़ा दिया।''[5] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि बाबाओं की कमाई का जरिया अंधविश्वासी भक्त ही हैं जो बाबाओं के मोह जाल में फंसकर अपना सब कुछ लुटाने के लिये भी तैयार हो जाते हैं।

आधुनिक तकनीक युग में स्त्रियों को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त हो रही है। इस स्वतंत्रता ने कई स्तरों पर स्त्रियों को उदार बनाया है तो कहीं उसे उच्छृंखलक भी। बचपन से ही पॉकिटमनी, मोबाइल फोन और इंटरनेट के सहारे आज की स्त्री पली–बढ़ी होती है। इन युक्तियों का प्रयोग कर जहां स्त्री अपने वैचारिक स्तर को नया आयाम दे रही है वहीं कई स्त्रियाँ इसका दुरूपयोग कर अपने जीवन का स्वाहा भी कर लेती है। इन परिस्थितियों पर व्यंग्य करते हुए करते हुए प्रेम जनमेजय लिखते हैं कि–''मेरी माँ सुबह की चाय के बाद नहा–धोकर प्रभु भजन को तैयार होती थी। मेरी माँ की अँगुलियाँ माला फेरा करती थी और उनका जुग ऐसे ही बीता। मेरी पत्नी की अँगुलियाँ मोबाइल स्क्रीन के फेर में रहती है और बहुत जल्दी आपके मस्तिष्क में चिप फिट हो सकती है जो आपके सोचने भर से काम करेगी। आपकी अँगुलियाँ मुक्त हो जायेंगी जिन्हें कहीं भी फेरने को आप स्वतंत्र हैं।''[6] प्रस्तुत पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि स्त्री की आजादी के मायनों पर विचार करने की आवश्यकता है। आज की जागरूक स्त्री को इन तकनीकों का उचित प्रयोग कर अपना विकास करना चाहिए।

वर्तमान परिदृश्य में साहित्य की अन्य विधाओं में जितना लेखन हो रहा है, उसके समानान्तर व्यंग्य रचनाएँ नहीं हो रही है। जिसका कारण यह है कि व्यंग्य रचना अपने उद्देश्य की गम्भीरता और मारक शक्ति के कारण बेहद संजीदा और चुनौतिपूर्ण कर्म है। जिसमें प्रेम जनमेजय अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन का करते हैं। प्रेम जनमेजय विभिन्न विख्यात–कुख्यात घटनाओं को जो पहले ही भरपूर नामी–बदनामी कमा चुकी होती है, उसे निचोड़कर पुनः अपने व्यंग्य की पेरनी मे पेर कर प्रस्तुत करने की तीक्ष्ण क्षमता रखते हैं। प्रेम जनमेजय अपने तीक्ष्ण, कटाक्ष और धारदार प्रहार के बलबुते पर बड़े ही प्रभावशाली ढंग से जनमानस के हृदय को झकझोर कर रख देते हैं। तत्कालीन विद्रूपताओं पर जोरदार हमला अपने व्यंग्यों द्वारा करते हैं। आजादी के पहले के व्यंग्य हथियारों से वर्तमान चुनौतियों का मुकाबला नहीं किया जा सकता है। इसमें कुछ नयापन लाने की आवश्यकता है, जिसके द्वारा मौजूद चुनौतियों को उजागर कर उसे दूर करने का प्रयास किया जा सके। प्रेम जनमेजय 'लीला चालू आहे' में इन्हीं व्यंग्यास्त्रों का प्रयोग करते हुए कन्या जन्म के अवसर पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि–''कन्या रत्न की प्राप्ति हुई है, कहते हुए उसका चेहरा कोयला हो रहा था। उसके चेहरे पर पराजित–नेता की मुस्कान थी जो जनता को सामने पाकर विवशता में आती है। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं नवजात–शिशु के आगमन की बधाई दूं या सहानुभूति प्रकट करूं।''[7] उक्त कथन द्वारा प्रेम जनमेजय वर्तमान स्थितियों का स्पष्ट चित्रण नयेपन के साथ प्रस्तुत किये हैं। हम आधुनिक होने का ढ़ोंग तो करते हैं परन्तु मानसिक व वैचारिक रूप से आधुनिकता को ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं।

निष्कर्ष:

यह कहा जा सकता है कि प्रेम जनमेजय एक ऐसे व्यंग्यकार हैं जिन्होंने व्यक्तिकता और निजता से उपर उठकर लेखन कार्य किया है। उनकी रचनाएं उन्हें अन्य व्यंग्यकारों से अलग करती है। प्रेम जनमेजय अपनी रचनाओं के माध्यम

से समकालीन विसंगतियों को यथार्थ रूप में अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करते हैं। चाहे वह सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक विसंगति हो या राजनीतिक प्रत्येक पहलू को प्रेम जनमेजय अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से परखकर ही प्रस्तुत करते हैं। जनसंख्या में बढ़ोतरी, निर्धनता, बेरोजगारी, असमानता, अशिक्षा, गरीबी, आतंकवाद, घुसपैठ, बाल श्रमिक, श्रमिक असंतोष, छात्र असंतोष, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, दहेज प्रथा, बाल विवाह, भ्रूण बालिका हत्या, विवाह–विच्छेद की समस्या, जातिवाद इत्यादि समस्याओं को चुटीले एवं व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत कर वास्तविकता को उजागर करना उनकी लेखनी की प्रमुख विशेषता है जो पाठक को हमेशा जोड़े रखती रखती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1- चंदर, सुभाष. हिंदी व्यंग्य का इतिहास. दिल्ली : भावना प्रकाशन. प्रथम संस्करण : 2008. पृ. 17.
2- देसाई, बापूराव. स्वातंत्रयोत्तर हिंदी व्यंग्य निबंध एवं निबंधकार. कानपुर : चितंन प्रकाशन. प्रथम संस्करण 1987. पृ. 24.
3- अग्रवाल, गिरिराजशरण. 51 श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं : प्रेम जनमेजय. नई दिल्ली. डायमंड बुक्स. संस्करण 2009. पृ. 206.
4- जनमेजय, प्रेम. ज्यों–ज्यों बूड़े श्याम रंग. नई दिल्ली. सामयिक बुक्स. संस्करण 2016. पृ. 49.
5- जनमेजय, प्रेम. कोई मैं झूठ बोलया. नई दिल्ली. ग्रंथ अकादमी. प्रथम संस्करण 2014. पृ. 65.
6- जनमेजय, प्रेम. भ्रष्टाचार के सैनिक. नयी दिल्ली. वाणी प्रकाशन. प्रथम संस्करण 2017. पृ. 96.
7- जनमेजय, प्रेम. लीला चालू आहे. दिल्ली. भावना प्रकाशन. प्रथम संस्करण 2015. पृ. 102.